IJAER/Dec - 2012/Volume-1/Issue-4 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

वैदिक साहित्य में प्रतिपादित हिन्दू संस्कार

Satish Chand Yadav

Research Scholar

C.M.J.University, Meghalaya.

Dr Ajay Kumar

H.O.D. Translam College of Law

Mawana Road , Meerut.

वैदिक–साहित्य में सूत्रकाल अध्ययन और चिन्तर की उस परम्परा का प्रतिनिधि है जो वैदिक–साहित्य की परवर्ती संस्कृत–साहित्य से जोड़ती है। इन सूत्रों की शैली का परिचय उसी व्यक्ति को मिल सकता है जिसमें इन्हें समझने का प्रयत्न किया है। सूत्र का अभिप्राय है धागा, और सूत्रों में छोटे, चुस्त अर्थगर्भित वाक्यों की मानो एक धागे में पिरोकर रखा जाता है। संक्षिप्तता इनका विशेषता है। सूत्र–रचनाओं में शास्त्रीय विषय को व्यवस्थित रूप में संक्षिप्त शैली में प्रस्तुत किया जाता है। दिण्टरनिटज के अनुसार, विश्व के सम्पूर्ण साहित्य में इन सूत्रों की तरह की कोई रचना नहीं है। वैयाकरण पतंजलि का यह कथन भी स्पष्ट है कि सूत्रकार आधी मात्रा की बचत पर उतना ही आनन्दित होता है जितना पुत्र जन्म पर।

सूत्र–साहित्य की प्राचीन रचनाओं में अनेक शताब्दियों के ज्ञान का भण्डार एकत्र किया गया है। वे शताब्दियों के चिन्तन, मनन और अध्ययन के परिणाम है और उन्हें जो रूप प्राप्त हुआ है, वह भी अनेक शताब्दियों की अनवरत परम्परा का परिणाम है कल्प के अन्तर्गत अये भाने वा सूत्रशैली की रचनाएं भी श्रुति से भिन्न हैं। श्रोतसूत्र, गृहयसूत्र, धर्मसूत्र नाम की सभी रचनाएँ श्रुति से भिन्न हैं। यदि सूत्रों की ब्राहमणों व परवर्तीकालीन मन्त्रों के साथ तुलना की जाए तो इनमें इस प्रकार की कोई बात नहीं मिलती जिसे श्रुति में शामिल किया जाये।

सूत्रों को दो भागों में विभाजित किया गया है– श्रोतसूत्र तथा स्मार्तसूत्र। श्रौतसूत्र वे हैं जिनके स्रोत श्रुति में मिलते हैं। स्मार्तसूत्र वे हैं जिनका इस प्रकार का कोई स्रोत नहीं है। जिन विषयों का विवेचन सूत्रों–श्रौत, गृहय और सामयाचारिक सूत्रों– में किया गया है, उन्हीं का वर्णन श्लोकबद्ध स्मृतियों में किया है। कल्प को सबसे पूर्ण वेदाइंग स्वीकार किया गया है। इसमें सूत्रों का विशाल भण्डार समाहित है ये सूत्र–यज्ञ के नियमों के विषय मे है। कल्पसूत्र मुख्यतः चार प्रकार के हैं:–

1. श्रौतसूत्र 2. गृहयसूत्र 3. धर्मसूत्र 4. शुल्कसूत्र

गृहयसूत्रों का उद्भव–

अत्यन्त प्राचीन वैदिक साहित्य में गृहयसूत्रों का वर्णन नहीं मिलता। गृहयसूत्रों में उदधत अनेक संस्कार सूक्तों की रचना से पहले भी प्रचलित थे। परन्तु इस समय गृहयकर्मों का स्वरूप बहुत सरल था उसमें यजुस मन्त्रों का प्रयोग नहीं किया जाता था। मन्त्रों का प्रयोग हुआ जैसे सोमयज्ञ में।

ओल्डेनवर्ग के अनुसार ''ऋग्वैदिक काल'' के बाद विवाह तथा अन्त्येष्टि जैसे कर्मो में मन्त्रों का प्रयोग प्रारम्भ हो गया। 10 वें मण्डल में विवाह और मृत्यु से सम्बन्धित मन्त्र मिलते हैं। परन्तु ब्राहमणों के काल में भी गृहयकर्मों, पालयज्ञ या स्थालीपाक को वर्णन करने वाले ग्रन्थों का अभाव था। ब्राहमणों के समय गृहयसूत्रों जैसे रचनाएँ नहीं थी इसका एक प्रमुख प्रमाण ओल्डेनबर्ग ने प्रस्तुत किया है कि उनमें कई स्थानों पर ऐसे विषयों का विवेचन है जिनका वर्णन गृहयसूत्र में होना चाहिए था। ब्राहमण–कालीन गृहयसूत्रों में वर्णित क्रियाओं के विवेचन का आरम्भ काल था। पाकयज्ञ का ज्ञान हो चुका था। उसमें प्रयुक्त होने वाले कतिपय श्लोकों का भी विकास हो चुका था।

गृहयसूत्रों में गृहस्थ के दैनिक–जीवन की घटनाओं धार्मिक क्रियाओं और संस्कारों का वर्णन आरम्भ किया है। परन्तु ये याज्ञिक–क्रियाओं तक ही सीमित रह जाते हैं। इसके बाद धर्मसूत्र आगे महत्वपूर्ण कदम उठाते हैं। इसके अतिरिक्त धर्मसूत्र अन्य विषयों के साथ–साथ गृहयसूत्रों में विवेचित विषयों को भी समेट लेते हैं। गृहयसूत्र और धर्मसूत्र के विषयों की समानताएँ मुख्यतः स्नातक के व्रत और अनध्याय के सम्बन्ध में नियमों के सन्दर्भ में ही द्रष्टव्य हैं। गृहयसूत्रों के किसी विषय का समावेश ऐसी घटना नहीं जो निश्चित रूप से सूत्रकार के ऐक्य का प्रमाण हो सके। ओल्डेनवर्ग के शब्दों में ''मेरा विश्वास है कि कोई भी पाठक जो इन दोनों प्रकार की तुलनाओं की रचना करतह है जिस विषय परिधि में धर्मसूत्र की व्याख्या घिरी है वह निश्चित रूप से गृहयसूत्रों के विषयक्षेत्र की अपेक्षा अधिक विस्तृत है।''

1.2 गृहयसूत्रों का सामान्य–परिचय–

गृहयसूत्रों में मुख्यतः उन याज्ञिक कर्मो और संस्कारों का वर्णन है, जिनका सम्बन्ध मुख्यतः गृहय से है। गृहयसूत्रों के विषय विविध है। इनमें संस्कारों का वर्णन प्रधान होने पर अनेक सामाजिक–प्रथाओं और रीति–रिवाजों के भी वर्णन हैं। पंचमहायज्ञ, श्राद्धकर्म तथा अभिचारिक क्रियाओं के भी वर्णन हैं। गृहयसूत्रों में वर्णित विषय इस प्रकार हैं–विवाह, सीमान्तोन्नयन, पुसंवन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, चौलकर्म, उपनयन, समावर्तनसंस्कार, प्रतिवर्ष किये जाने वाले पंचमहायज्ञ, देवों, पितरों वै थ्ल्ए ब्थ्ल्क्म्, स्थ्म्छज्ञध्ज्ञज्ञन्, तर्पण के अतिरिक्त वर्ष के विभिन्न अवसरों पर किये जाने वाले कर्म जैसे भवन–निर्माण के समय के कर्म, नये अन्न के ग्रहण के कर्म प्रथ्वी पर सोने के लिए विधान, रोगी बालक, या यपत्नी के रोग को दूर करने के लिए अभिचारिक– क्रियाएं और श्राद्धकल्प का वर्णन। गृहयसूत्रों के अन्तर्गत अनेक रोचक कर्मों का भी वर्णन किया गया है।

''गृहय'' शब्द की व्याख्या अनेक प्रकार से की गयी है, आश्वलायन–गृहयसूत्र के अनुसार गृह का अर्थ घर और पत्नी है। गोमिल–गृहय–गृहयसूत्र में गूहय का अर्थ– पत्नी के साथ किये जाने वाले कर्म कहा है। गूहयसूत्रों के अनुसार जो कर्म किये जाते हैं उनका सामान्य नाम पाकयज्ञ है। पाक अर्थ पकाना न होकर अपितु छोटा या पूर्ण अर्थ है। गृहयसूत्रों में जिन कर्मों का वर्णन है वे आचारलक्षण हैं। इनका ज्ञान प्रयोग या आचार से होता है, श्रुति से नहीं। गृहयसूत्रों में 11 से लेकर 18 संस्कारों तक का विवेचन है।

गृहयसूत्रों का सम्बन्ध विभिन्न वेदों से है। अधिकांश गृहयसूत्रों का सम्बन्ध यजुर्वेद से है। तैतिरीय–संहिता से सम्बद्ध बौधा–यन, भारद्वाजि, हिरण्यकेशी, काठक, मैत्रायणीय गृहयसूत्रों के भी उद्धरण मिलते हैं। शुक्ल–यजुर्वेद के गृहयसूत्रों की संख्या और भी अधि है। बाजसनेयी शाखा के प्रत्येक चरण में कुल धर्म थे, जिनको गृहयसूत्र या धर्मसूत्र माना जा सकता है, परन्तु वाजसनेयी–शाखा का केवल पारस्करगृहयसूत्र ही इस समय उपलब्ध है। विभिन्न वेदों के गृहयसूत्रों का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है–

1. आश्वलायन–गृहयसूत्र–

ऋग्वेद से सम्बद्ध आश्वलायन गृहयसूत्र में चार अध्याय हैं, जिनका विभाजन कई खण्डों में किया गया यहै। इनमें प्राचीन आचार्यों के नाम मिलते हैं और वेद के अध्ययन के नियमों का विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। हरदत्त की व्याख्या के साथ यह गृहयसूत्र अनन्त–शयन ग्रन्थमाला में प्रकाशित है।

2. शाड.खायनगृहयसूत्र–

ऋग्वेद से सम्बद्ध दूसरा गृहयसूत्र शाड.खायनगृहयसूत्र है। संस्कारों के वर्णन के अतिरिक्त इसमें छह अध्यायों में गृहनिर्माण, गृहप्रवेश आदि का वर्णन है इसकी रचना सुयज्ञ ने की।

3. कौषितकिग्रहयसूत्र–

शाड. खायन और कौषितकि शाखा को एक ही माना जाता है लेकिन इन दोनों शाखाओं का अलग–अलग गृहयसूत्र प्राप्त हुआ। इस गृहयसूत्र के रचयिता शाम्भव्य हैं। इसीकारण इसे षम्भव्यगृहयसूत्र भी कहा जाता है। कौषितकि– गृहयसूत्र में पाँच–अध्याय हैं। इनमें प्रथम चार विषय का दृष्टि से शाड.खायनगृहसूत्र के अनुरूप हैं। यह गृहयसूत्र 1944 ई0 में मद्रास विश्वविद्यालय संस्कृत–ग्रन्थावली में प्रकाशित हुआ।

4. पारस्करगृहयसूत्र–

यह शुक्ल–यजुर्वेद का एकमात्र ग्रहयसूत्र है। इसमें तीन काण्ड हैं। इस गृहयसूत्र की कई व्याख्याएं हैं। इसके पाँच व्याख्याकार है। पाँच भाष्यों के साथ इसका संस्करण गुजराती प्रेस बम्बई से प्रकाशित है।

5. बौधयन–गृहयसूत्र–

कृष्णयजुर्वेद की तैतिरीय शाखा का गृहयसूत्र बौधायन गृहयसूत्र है। इसके अतिरिक्त इस शाखा के चार और गृहयसूत्र उपलब्ध हैं। इसका प्रकाशन गवर्नमैन्ट ओरियन्टल लाईब्रेरी मंसूर से हुआ है।

6. आपस्तम्ब–गृहयसूत्र–

यह भी कृष्ण यजुर्वेद की तैतिरीय शाखा से सम्बद्ध है। इसमें आठ पटल और तेईस खण्ड हैं। इसका सम्पादन डा0 विण्टरनित्य ने 1887 में किया और चौखम्बा संस्कृत सीरीज में इसका पहली बार प्रकाशन 1928 में हुआ। इसका हिन्दी अनुवाद युक्त संस्करण प्रस्तुत है।

हिरण्यकेशी गृहयसूत्र– यह भी कृष्णयजुर्वेद की तैतिसीय शाखा का तीसरा गृहयसूत्र है। इसे सत्माषढऋगृहयसूत्र भी कहते हैं। इसका प्रथम संस्करण डॉ0 क्रिष्टे ने वीयाना से निकाला था।

8. भारद्वाज–गृहयसूत्र–

यह भी कृष्णयजुर्वेद की तैतिसीय शाखा का गृहयसूत्र है। यह लाइडेन से 1913 में प्रकाशित हुआ है।

9.मानवगृहयसूत्र –

यह कृष्ण–यजुर्वेद का मैत्रायणी शाखा का गृहयसूत्र है। यह अष्टावक्रभाष्य के साथ गायकबाड ओरियण्टल सीरीज में प्रकाशित हुआ।

10. काठक गृहयसूत्र –

यह कृष्ण यजुर्वेद की कठ शाखा से सम्बद्ध है। इसे लौगाक्षिगृहयसूत्र भी कहते हैं इसमें 73 कण्डिकाएं हैं। इसे गृहयपंचिका भी कहते हैं। इसमें तीन टीकाऐं उपलब्ध हैं। डॉ0 कैलैडड ने इसका संस्करण लाहौर से प्रकाशित कराया था।

11. गोभिलगृहयसूत्र –

यह सामवेद से सम्बन्धित है। यह सबसे प्राचीन है। इसमें सामवेद और मन्त्रब्राहमण के मन्त्रों के उद्धरण हैं। इसका संस्करण कल–फत्ता से प्रकाशित है।

12. खादिर गृहयसूत्र –

सामवेद को राणामनीय शाखा का गृहयसूत्र खादिर गृहयसूत्र है जो गाभिल गृहयसूत्र से मिलता –जुलता है। यह मैसूर से प्रकाशित है।

13. जैमिनीय गृहयसूत्र –

यह सामवेद से सम्बन्धित है एवं दो भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में 24 कण्डिकाएं हैं तथा द्वितीय भाग में 9 कण्डिकायें हैं। इसमें सामवेद के अनुसार मन्त्रों के उद्धरण हैं।

14. कौशिक गृहयसूत्र –

अर्थर्ववेद से सम्बद्ध केवल यही एक गृहयसूत्र उपलब्ध है। इसमें 14 अध्याय हैं। इसकी दो व्याख्याएं उपलब्ध हैं। इसमें प्राचीनकाल में जादू की अने क्रियाओं का वर्णन है और अथर्वेद के कई अभिचारिक सूक्तों को समझने में सहायता मिलती है। वैधक शास्त्र के विषयों पर भी इस गृहयसूत्र से प्रकाश पड़ता है। इसका संस्करण ब्लूमफील्ड ने 1890 में अमेरिका से प्रकाशित कराया और हिन्दी अनुवार के साथ संस्करण 1942 में मुजफ्फरपुर से प्रकाशित हुआ है।

संस्कारों का उद्भव विकास एवं महत्व–

संस्कार हिन्दू–धर्म अथवा किसी भी धर्म या सम्प्रदाय के महत्वपूर्ण अंग हैं। इतिहास के प्रारम्भ से ही वे धार्मिक तथा सामाजिक एकता हे प्रभावकारी माध्यम रहे हैं। उनका उदय सुदूर अतीत में हुआ था और कालक्रम से अनेक परिवर्तन के साथ वे आज भी जीवित हैं। संस्कार द्वारा ही हम इस महत्ता को स्वीकार करते हैं कि हमारा जीवन ऋणों के बोझ से बोझिल है और उसे हल्का करने के लिए केवल एक ही माध्यम है–यज्ञ। याज्ञिक क्रियाओं के लिए एक ओर जहा आन्तरिक शुद्धता की आवश्यकता होती है, वहीं दूसरी ओर बाह्य शुद्धता का भी वास्तव में संस्कार व्यंजक तथा प्रतीकात्मक अनुष्ठान हैं। उनमें बहुत से अभिनयात्मक उद्गार और धर्म की वैज्ञानिक मुद्राएं भी पायी जाती हैं। इसकि आधारभूत तत्व को समझे बिना संस्कार सामान्य लोगों की बाल–क्रीड़ा जैसे प्रतीत होगें। संस्कार प्राचीन भारतीय समाज के आदर्शों और महत्वाकांक्षाओं को भी प्रकट करते हैं।

ऋग्वेद की रचना के समय संस्कारों का कोई व्यवस्थित क्रम समाज में विद्यमान नहीं था। फिर भी प्रसंगवश कुछ फुटकर संस्कार जैसे विवाह आदि का उल्लेख यहां प्राप्त है जो व्यवस्थित संस्कार के ही रूप में है इतना तो अवश्य कहा जा सकता है क्योंकि अन्त्येष्टि एवं गर्भाधान का उल्लेख यहॉ किया गया है। यर्जुद में जहॉ यज्ञ की क्रियाओं का वर्णन किया गया है वहीं नाई और छुरे की स्तुति की गई है और मुण्डन संस्कार का उल्लेख किया गया है। वैदिक–काल के अन्तिम चरण में संस्कारों की सामाजिक मान्यता स्वीकार कर ली गई होगी परन्तु इसके व्यवस्थित स्वरूप का अभी भी पूर्णतया अभाव था क्योंकि यहॉ भी इनका यथोचिज विवरण नहीं मिलता। ब्राहमण–ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि उस समय संस्कारों का पालन समाज में प्रचलित था। गोपथ–ब्राहरण में उपनयन संस्कार का विवरर्ण मिलता है।

आरण्यक और उपनिषद से भी इसी प्रकार की व्यवस्था का ज्ञान मिलता है। छान्दोग्य उपनिषद में विवाह और अन्त्येष्टि संस्कार का उल्लेख मिलता है। इसकि बाद क्रमशः गृह्यसूत्रों, धर्मशास्त्रों,

महाकाव्यों आदि का युग आता है। गृह्सूत्रों के समय से ही संस्कार पूर्ण व्यवस्थित हो चुके थे क्योंकि गृह्यसूत्रों के समय से ही संस्कार पूर्ण व्यवस्थित हो चुके थे क्योंकि गृह्यसूत्रों में ही पूर्णरूप से संस्कार का व्यवस्थित विवरण प्राप्त होता है।

संस्कार का प्रयोजन–

प्राचीन काल में समाज में संस्कारों का संयोजित विधान रहा है। जीवन में इसकी संयोजना इसलिये की गई कि मनुष्य का वैयक्तिक अर सामाजिक विकास हो सके और उसका दैहिक और भौतिक जीवन सुव्यवस्थित हो सके। व्यक्ति के असंस्कृत स्वरूप को सुसंस्कृत और अनुशासित करने के निमित्त संस्कारों की प्रयोजना की गई। अप्रत्यक्ष रूप से मनुष्य के जीवन पर कुप्रभाव डालने वाले और अदृश्य विघ्नों से निरापद होने के लिये भी संस्कारों का निर्धारण हुआ। शुद्धता, अहिंसकता, धार्मिकता और पवित्रता संस्काार की प्रधान विशेषताएं मानी गई हैं। धर्म, यज्ञ ओर कर्म काण्ड इसका मूल आधार रहा। मनुष्य का आध्यात्मिक और सांस्कृतिक जीवन संस्कारों की निष्पन्नता से प्रभावित होता रहता है।

प्राचीन काल से आज तक अनेक परिवर्तनों के पश्चात् भी सभी समाजों में संस्कारों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय समाज और संस्कृति में संस्कार का प्रमुख स्थान है।

प्राचीन काल से आज तक अनेक विश्वास और कर्मकाण्ड जुटते रहे हैं, जो उसके स्वरूप और कार्यविधि को समयानुसार आन्दोलित करते रहे हैं। इससे प्रयोजन और उद्देश्य भी समय–समय पर प्रभावित होते रहे हैं। ये प्रयोजन और उद्देश्य इसके सामाजिक और धार्मिक पक्षों से सम्बन्धित हैं।[1]

धार्मिक–कर्मकाण्डों को संस्कार में पूर्ण स्थान दिया गया है। जैसे पुरोहित, हवन, यज्ञ, मन्त्र आदि। इसका कारण यह है कि व्यक्ति की निष्ठा धर्म में पूर्णरूप से बनी रहे। संस्कार के द्वारा इहलोक और परलोक दोनों ही पवित्र होते हैं।[2] वह स्वर्ग की प्राप्ति कर सम्भव होना माना जाता है।[3] इसके द्वारा चरित्र के निर्माण पर भी बल दिया गया है।[4] इस प्रकार भारतीयों का विश्वास था कि संस्कारों अनुष्ठाान से वे दैहिक बन्धन से मुक्त होकर मृत्यु–सागर को पार कर लेगें।[5]

संस्कारों के प्रयोजन तथा महत्व की गवेषणा के मार्ग में अनेक कठिनाईयां हैं। सर्वप्रथम वे परिस्थितियां, जिसमें उनका प्रादुर्भाव हुआ था वे युगों के गर्भ में जा छिपी हैं और उनके चारों और लोक में प्रचलित अन्धविश्वासों का जाल सा बिछ गया है। अतः उनसे दूर वर्तमान में समस्याओं को देखने पर तथ्यों के गम्भीर ज्ञान से संयुक्त सुनियोजित कल्पना अपेक्षित है।

दूसरे जातीय भावना अतीत क`देदीप्यमान पार्श्व की ओर ध्यान देती है अैर इस प्रकार समीक्षात्मक दृष्टि आच्छन्न हो जाती है जो किसी भी अनुसंन्धान कार्य के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

प्रतीकात्मक प्रयोजन–

मनुष्य के जीवन से सम्बन्धित जो विशिष्ट भावनाएं और उद्वेग उत्पन्न होते हैं जैसे घृणा, भर अनुराग, आनन्द, स्नेह–प्रेम, शोक, दुःख आदि व्यक्ति के मन की ऐसी अभिव्यक्तियां है जो हर्ष और विशाद को प्रतीकात्मक रूप से व्यक्त करती है।

किन्तु प्राचीन काल में गृहस्थ न तो बराबर ही भयभीत ही रहता था और न वह देवताओं का व्यावसायिक प्रार्थी ही था। वह जीवन की विभिन्न घटनाओं के कारण होने वाले हर्ष, आनन्द और यहां

[1] डॉ0 जयशंकर मिश्र– प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ0 266
[2] कार्य शरीरं संस्कारः पावनः प्रत्यय। मनु0 2.26
[3] स्वर्गकामी यजेते, पूर्व मीमांसा।
[4] ब्राह्मण यमपि तदवत स्यात संस्कारै विधि पूर्वकम। बो0 मिल्म्म पृ0 139
[5] डॉ0 राजबली पाण्डेयः हिन्दू संस्कार, पृ0 31

तक कि दुःख व्यक्त करने के लिए भी संस्कारों का अनुष्ठाान करवाता था। पुत्र जन्म के बाद गृहस्थ को अपार हर्ष होता था। नामकरण पुत्र–जन्म के आनंद को व्यक्त करने का संस्कार है और यह इच्छा की जाती थी कि प्रथम बार पुत्र का जन्म हो क्योंकि इससे पिता पित् ऋण से मुक्त हो जाता है।

विघ्न–बाधाओं और अशुभ शक्तियों से जीवन की रक्षा–

व्यक्ति के जीवन में विघ्न– बाधाओं आती थी जिससे उसके विकास का क्रम अवरूद्ध हाता था। ऐसी अशुभ शक्तियों और विघ्न–बाधाओं से जीवन की रक्षा के लिये संस्कारों की नियोजना की गई जिनके सम्पन्न करने से ऐसी समस्त तामसी बाधाएं समाप्त हो जाती थी।

अवांछित प्रभावों के निराकरण के लिए मनुष्यों ने अपने संस्कारों के अन्तर्गत अनेक साधनों का अवलम्बन किया उसमें प्रथम स्थान आराधना का था, ताकि अदृश्य बाधाएं और अशुभ शक्तियां निष्क्रिय हो जायें और व्यक्ति के जीवन का विकास रूप से हो सके। यदि शिशु पर कोई रोग आता है या बिमार पड़ता है तो शिशु का पिता कहता है– शिशुओं पर आक्रमण करने वाले कुकुर, शिशु को मुक्त कर दी। हे सिसर। मैं तुम्हारे प्रति आदर प्रकट करता हूँ।

दूसरा उपाय था बहकाने का, मुण्डन के अवसर पर काटे गये केशों को गाय के गोबर के साथ पिण्ड बनाकर गोष्ठ में गाड़ दिया जाता था या नदी में फेंक दिया जाता था। ये कर्म–काण्ड की विधियां परोक्ष रूप से मानव को मनोवैज्ञानिक सन्तुष्टि प्रदान करती है जिससे मनुष्य मानसिक रूप से भयाकुल नहीं रहता वह अपने विश्वास के आधार पर इन विधियों के क्षरा अपने आप को सुरक्षित समझने लगता है और उनमें एक विशेष प्रकार का स्वाभिमान जागृत हो जाता है।

दिन में सोना नहीं चाहिए और अधिक बोलना नहीं चाहिए अथवा मौन रहना चाहिए। मेखला, यज्ञोपवीत, दण्ड, मृगचर्म, आदि को अवश्य धारण करना चाहिए। गुरू की सेवा तथा उसकी आज्ञान का पालन करना चाहिए। बिना खटाई और लवण रहित भोजन करना चाहिए। मधु आदि का भी सेवन नहीं करना चाहिए। गहरे तालाब में डुबकी लगाना, स्त्री का संसर्ग, नृत्य गीत आदि से दूर रहना चाहिए। 48 वर्ष तक, 24 वर्ष तक अथवा 12 वर्ष तक वेद का अध्ययन करना चाहिए। आचार्य के द्वारा पुकारे जाने वा सावधानी पूर्वक प्रत्युत्तर देना चाहिए। यदि ब्रह्मचारी सोया हुआ हो तो पुकारे जाने पर बैठकर उत्तर दे, बैठा है तो खड़ा होकर और खड़ा है तो चलते हुए प्रत्युत्तर दे। भिक्षा मांगने के लिए गुरू को बतलाकर जाए और अपने वर्ण के अनुसार सम्बोधन करता हुआ भिक्षा प्राप्त करें। यदि स्त्री हो तो उसे माता कहकर भिक्षा प्राप्त करें और भिक्षा लाकर सीधा आचार्य के पास ले जाये। आचार्य द्वारा प्रदत्त आदिष्ट भिक्षा का अन्न ही ग्रहण करें।

Bibliography

1. द्विविधः संस्कारों भवति, ब्राह्मणी देवश्च। गर्भाधानादिः स्मार्तों बाह्य। हा0घ0सू0

2. यज्ञो दानं तपश्चैवं यावनानि मनीषिणाम। पौ.गृ.सू.18.50

3. डॉ0 जयशंकर मिश्र– प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ0 266

1. कार्य शरीरं संस्कारः पावनः प्रत्यय। मनु0 2.26

2. स्वर्गकामी यजेते, पूर्व मीमांसा।

3. ब्राह्मण यमपि तदवत स्यात संस्कारै विधि पूर्वकम। बो0 मिल्म्भम पृ0 139

6. डॉ0 राजबली पाण्डेयः हिन्दू संस्कार, पृ0 31

7. याज्ञवल्वय स्मृति 1.14 पर अपरार्क की व्याख्या।

8. आ. गृहम्सूत्र 1.19, शां गृ सू. 2.1. वौ. गृ0. सू. 2.5, आप गृ. सू. 11, गौ गृ. सू. 10, मनु स्मति 2.30, याज्ञवल्कय स्मृति 1.1 ।।

9. तुलनीय डॉक्टर अ.स. अल्टेकर, एजुकेशन इन एसियेण्ट इण्डिया अ. 1 पृष्ठ 11–12 ।

10. शंख और लिखित, हरि कर द्वारा पारस्कर गृह्यसूत्र से।

11. एपिग्राफिया कर्नाटिया, 3, मलवल्ली अभिलेख संख्या 23 ।

12. मनुस्मृति, 2.30, याज्ञवल्क्य स्मृति 1.17 ।

13. भा. स्मृति 2.36 पर मेंधातिथि का भाष्य ।

14.गैरोला, वाचस्पति : संस्कृत साहित्य का इतिहास पृष्ठ 118 ।